आमंत्रण

स्वस्थ एवं सामंजस्यपूर्ण जीवन के लिए योग

मुख्य अतिथि

पद्मभूषण स्वामी निरंजनानन्द सरस्वती

अध्यक्षता

प्रोफेसर राघवेन्द्र प्रसाद तिवारी
कुलपति

विशिष्ट अतिथि

योगाचार्य विष्णु आर्य सागर
योगाचार्य एन. आर. भार्गव जबलपुर
कर्नल राकेश मोहन जोशी कुलसचिव

समय : 11:30 बजे पूर्वाह्न, 24 सितम्बर 2019

स्थान : श्रीमंत राजमाता विजयराजे सिंधिया स्वर्ण जयंती सभागार

इस अवसर पर आप सभी सादर आमंत्रित हैं।

आयोजकः

प्रोफेसर गणेश शंकर, अध्यक्ष, योग शिक्षा विभाग

डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर (म०प्र०)

(केन्द्रीय विश्वविद्यालय)

स्वामी जी का जीवन परिचय प्रतिपष्ट पर .....

पद्मभूषण स्वामी निरंजनानन्द सरस्वती

संस्था प्रमुख, बिहार योग विद्यालय, मुंगेर

(प्रधानमंत्री अन्तर्राष्ट्रीय योग सम्मान, 2019 से सम्मानित)

स्वामी निरंजनानंद सरस्वती योग के प्रसिद्ध जानकार हैं। छत्तीसगढ़ के राजनांदगांव में 14 फरवरी, 1960 को जन्मे परमहंस स्वामी निरंजनानंद सरस्वती की जीवन दिशा उनके गुरु स्वामी सत्यांनद द्वारा निर्देशित रही। स्वामी सत्यानंद सरस्वती, बिहार योग विद्यालय के संस्थापक थे। 1964 में मुंगेर में बिहार योग विद्यालय की स्थापना हुई और उसी साल चार वर्ष की अवस्था में बालक निरंजन योग विद्यालय में प्रविष्ट हुए। यहां उन्हें गुरु ने योग निद्रा के माध्यम से योग और अध्यात्म का प्रशिक्षण दिया। कम उम्र में ही वे इतने योग्य हो चुके थे कि स्वामी सत्यानंद ने उन्हें दशनामी संन्यास परंपरा में दीक्षित कर विदेशों में योग के प्रचार – प्रसार की जिम्मेदारी सौंप दी। इस दौरान उन्हें न सिर्फ लोगों को योग समझाना था बल्कि दुनिया की विविध संस्कृतियों को समझना था। साथ ही साथ सांस्कृतिक एकता के योगिक सूत्रों की खोज भी करनी थी।

अल्फा रिसर्च के लिए नोबेल पुरस्कार से सम्मानित डॉ जो कामिया के साथ उन्होंने विशेष तौर पर ध्यान और प्राणायाम के क्षेत्र में अनुसंधान किया। सैन फ्रांसिस्को, कैलिफोर्निया के ग्लैडमैन मेमोरियल सेंटर के जापानी डॉ टॉड मिकुरिया ने इनके साथ ध्यान संबंधी शोध किय। जिस समय स्वामी निरंजनानंद विदेश के लिए निकले, उस समय स्वामी सत्यानंद के योग आंदोलन के परिणामस्वरूप केवल फ्रांस में ही 77 हजार पंजीकृत योग शिक्षक थे। उस समय के लिए यह बहुत बड़ी संख्या थी। उन दिनों स्वामी निरंजनानंद सरस्वती जी का काय सिर्फ इन योग शिक्षकों को प्रशिक्षित करना था। इस आंदोलन का नाम 'योगा एजूकेशन इन स्कूल' रखा गया। 23 साल की उम्र तक निरंजनानंद सरस्वती अपने हिस्से का एक बड़ा काय पूरा कर वापस लौट आय।

भारत लौटने के पश्चात उन्होंने सन् 1993 के विश्वयोग सम्मेलन के बाद गंगा दर्शन में 'बाल योग मित्र मंडल' की स्थापना की। 1994 में विश्व के प्रथम योग विश्वविद्यालय, 'बिहार योग भारती' तथा 2000 में 'योग पब्लिकेशन ट्रस्ट' की स्थापना की। मुंगेर में विभिन्न गतिविधियों के संचालन के साथ उन्होंने दुनिया भर के साधकों का मार्गदर्शन करने हेतु व्यापक रूप से यात्राएं की। सन् 2009 में गुरु के आदेशानुसार संन्यास जीवन का एक नया अध्याय आरंभ किया। योग दर्शन, अभ्यास एवं जीवनशैली की गहन जानकारी रखनेवाले स्वामी निरंजनानंद सरस्वती ने योग, तंत्र, उपनिषद पर अनेक प्रामाणिक पुस्तकें लिखी हैं।

योग का मानव प्रतिभा के रूप में कैसे इस्तेमाल हो, इसके लिए वे निरंतर प्रत्यनशील हैं। स्वामी निरंजनानंद जी के मुताबिक योग अभ्यास नहीं है, यहां तक कि यह आध्यात्मिक साधना भी नहीं है, असल में यह एक जीवनशैली है।